विलय के बाद की यात्रा -

जब पानी भूल जाता है कि वह हाइड्रोजन था

पूज्य दाजी

के 70वें जन्मदिवस के अवसर पर

28 सितम्बर 2025 को कान्हा शान्तिवनम् में दिया गया संदेश

विलय के बाद की यात्रा -

जब पानी भूल जाता है कि वह हाइड्रोजन था

प्रियजनों,

अधिकांश लोग मानते हैं कि मुक्ति या निर्वाण आध्यात्मिक विकास की पराकाष्ठा है। यह लोभ, घृणा, अहंकार और अज्ञान की आग को बुझा देना है। यह दुःख और मृत्यु के चक्र का अंत है। यह मुक्ति की परम अवस्था है।

फिर, कबीर साहब के कथन के आधार पर हम विलय की सम्भावना के बारे में थोड़ा-बहुत समझने लगते हैं कि यह तब उत्पन्न होता है जब हमारा अहंकार पीछे हटना सीख लेता है। कबीर साहब इस प्रक्रिया को अत्यन्त सरल बताते हैं। वे कहते हैं कि विलय की यह अवस्था उसी प्रकार है जैसे वर्षा की बूँदें सागर में गिरती हैं। कोई भी बूँद यह बताने के लिए पीछे नहीं रह जाती कि सागर बन जाने का अनुभव कैसा होता है।

बाबूजी का यह चौंकाने वाला कथन, "जब आप विलय प्राप्त कर लेते हैं, तब अंततः आपको प्रारम्भिक साधक कहा जा सकता है," हमारी सारी समझ को उलट-पुलट कर देता है! जिसे हम अब तक मार्ग का गंतव्य समझते थे, वह तो वास्तव में हमें असली यात्रा प्रारम्भ करने के लिए तैयार कर रहा होता है।

दूसरे शब्दों में कहें तो एक संगीतकार अपने वाद्य यंत्र को बजाना सीखने में वर्षों लगा देता है। जब वह उसे पूर्णतया साध लेता है और उसके तथा उसके संगीत के बीच कोई अंतर नहीं रह जाता, तभी वह वास्तव में संगीत रचना करना प्रारम्भ कर पाता है। तब तरीके पीछे रह जाते हैं और उनका स्थान ले लेती है शुद्ध अभिव्यक्ति।

अब प्रश्न यह है – इस संगीतकार और संगीत के ऐक्य से भी परे क्या है? वह खामोशी जिसमें से समस्त संगीत उत्पन्न होता है और जिसमें विलीन हो जाता है। यह कोई निरर्थक खामोशी नहीं है, बल्कि हर सम्भव धुन से परिपूर्ण है। एक कुशल संगीतकार जानता है कि सबसे प्रभावशाली संगीत सुरों के बीच के अंतराल में ही बजता है।

"जब आप विलय प्राप्त कर लेते हैं, तब अंततः आपको प्रारम्भिक साधक कहा जा सकता है।"

– बाबूजी

आइए इस विलय और उसके बाद क्या होता है, उसके बारे में जानें।

सबसे पहले, हमें यह जानना होगा कि वास्तव में इसे कौन चाहता है। और यह जानने के लिए कौन बचा है कि खोज पूरी हो चुकी है? जब कोई बूँद यह दावा करती है कि "मैं सागर बन गई हूँ!" तो यह दावा दर्शाता है कि विलय अभी हुआ ही नहीं है। वास्तविक विलय में ऐसा दावा करने वाला कोई "मैं" नहीं बचता और न ही कोई ऐसा अस्तित्व बचता है जो अपने ही विघटन को देख सके। बूँद यह नहीं कह सकती, "मैं अब सागर हूँ," क्योंकि वह "मैं" ही वहाँ नहीं है जो ऐसा कह सके। यह वैसी मृत्यु नहीं है जैसा कि हम जानते हैं; यह सबसे बड़ा परिवर्तन है। मृत्यु शाश्वत जीवन की ओर भी ले जा सकती है।

एक पल के लिए इसके बारे में सोचें – वह बूँद जिसने प्रश्न पूछा था, “समुद्र-सा होने का अनुभव कौन करता है,” अब उसका अस्तित्व ही नहीं है। यह वैसा ही है जैसे कोई पूछे, “जब मोमबत्ती की लौ जंगल की आग में मिल जाती है तब वह क्या सोचती है?” यह प्रश्न ऐसे विचारक की कल्पना करता है जो अब जीवित ही नहीं है।

प्रकृति हमें यह महान रहस्य अत्यन्त साधारण वस्तुओं में दिखाती है। हाइड्रोजन का उदाहरण लें – वह विस्फोट कर सकता है, वह घातक है और कभी भी आग पकड़ सकता है। ऑक्सीजन प्रत्येक अग्नि को प्रज्वलित करती है और उसकी ज्वाला को अधिक तीव्र बना देती है। अलग-अलग रहने पर ये दोनों संकट का कारण हैं। लेकिन जब इनका उचित तरीके से संयोग होता है तब क्या बनता है? पानी! वही तत्त्व जो समस्त जीवन का आधार है और जो सम्पूर्ण सृष्टि को गतिमान रखता है।

अब ध्यानपूर्वक सुनें। इस संयोग में हाइड्रोजन का क्या हुआ? ऑक्सीजन कहाँ है? वे नष्ट नहीं हुए हैं बल्कि वे रूपान्तरित हो गए हैं – एक ऐसे रूप में जिसकी कल्पना वे अकेले रहकर कभी नहीं कर सकते थे। हाइड्रोजन यह नहीं कह सकता, “मैं अब पानी हूँ,” क्योंकि इस दावे की पुष्टि करने के लिए अब अपने शुद्ध स्वरूप में कोई हाइड्रोजन नहीं बचा है। एक नई वास्तविकता उभर कर आई है जो दोनों मूल तत्त्वों से भिन्न है और जिसका प्रयोजन भी सर्वथा भिन्न है।

देखें कि क्लोरीन और सोडियम कितने सारे अद्भुत कार्य कर सकते हैं! क्लोरीन एक ज़हरीली गैस है जिसका उपयोग युद्ध में होता है और सोडियम पानी के संपर्क में आने पर विस्फोट करता है। लेकिन जब ये दोनों मिल जाते हैं तब उनसे साधारण नमक बनता है जिसकी हमारी कोशिकाओं को आवश्यकता है। जो घातक था वह अनिवार्य बन गया है और जो विषैला था वह सुरक्षित बन गया है।

नदी का सागर में मिलना, बारिश की बूँदों का समुद्र में गिरना और हाइड्रोजन का ऑक्सीजन से संयोग – ये सभी इस बात को दर्शाते हैं कि एकरूप होना ही उद्देश्य है। यह दर्शाता है कि विलय का अर्थ केवल दो वस्तुओं को मिलाना नहीं है; यह कुछ नया और अधिक सार्थक बनाना है। यह पुरानी पहचानों को त्यागकर एक नई पहचान बनाना है जिसका उपयोग हर कोई एक भव्य प्रयोजन की पूर्ति के लिए कर सके।

* *एक महान निमित्त के लिए स्वयं को खो देना* – यह एक वस्तु का दूसरी वस्तु पर आधिपत्य पाने की बात नहीं है। बल्कि दोनों के अपने-अपने स्वरूपों को त्याग कर एक नए, उच्चतर प्रयोजन के लिए जुड़ने की बात है। इसे इस प्रकार समझिए – जैसे किसी प्रिय वस्तु का त्याग जिससे अंततः आपको पूर्णता और तृप्ति का अनुभव होगा।

* *केवल संयोजन नहीं बल्कि अवस्था में परिवर्तन* – एक सामान्य विलय दो अलग-अलग रंगों को मिलाकर एक नया रंग बनाने जैसा है। दूसरी ओर, एक पारलौकिक विलय दो वस्तुओं का आपस में मिलकर एक बिलकुल ही नई वस्तु बनाने की तरह है, जैसे हाइड्रोजन और ऑक्सीजन एक साथ मिलकर पानी बनाते हैं। वे केवल "मिलते" ही नहीं बल्कि परिवर्तित हो जाते हैं।

* *अप्रत्याशित परिणाम* – इस परिवर्तन से उत्पन्न उत्कृष्ट सत्ता ऐसे कार्य कर सकती है जिसे मूल तत्त्वों में से कोई भी अकेले नहीं कर सकता था। नई सत्ता के पास नई क्षमताएँ, नया मनस या नया लक्ष्य होता है जो विलय से पूर्व असम्भव था।

जब बाबूजी कहते हैं कि विलय तो केवल आरम्भ है तब बहुत से लोग चौंक जाते हैं। वे कहते हैं, "मालिक, यदि एक हो जाना ही अंत नहीं है तो उसके बाद क्या आता है?"

एक पारलौकिक विलय दो वस्तुओं का आपस में मिलकर एक बिलकुल ही नई वस्तु बनाने की तरह है, जैसे हाइड्रोजन और ऑक्सीजन एक साथ मिलकर पानी बनाते हैं। वे केवल "मिलते" ही नहीं बल्कि परिवर्तित हो जाते हैं।

मैंने अनुभव से जो सीखा है वह यह है –

सबसे पहले विलय आता है, जो सागर द्वारा नदी को खुशी से स्वीकार करने के समान है। भले ही यह अनुभव धुँधला हो लेकिन फिर भी उसमें नदी होने की याद बनी रहती है। ध्यान दें, नदी के इस प्रवाह को उसी लोक, सालोक्यता, में पहुँचना है।

फिर, जैसे-जैसे हम परिपक्व होते जाते हैं, हम सारूप्य हो जाते हैं और भिन्न होने की स्मृति भी मिट जाती है। जैसे सोडियम को याद नहीं रहता कि वह कभी सोडियम था। अब वह केवल नमक है और वह फिर से विस्फोटक प्रकृति वाला पदार्थ नहीं बनना चाहता।

यह सायुज्यता के लिए पर्याप्त नहीं है। इस बिन्दु पर, हमारी व्यक्तिगत "इच्छाशक्ति" समाप्त हो जाती है और ऐसा पूर्ण समन्वय बन जाता है कि दैवीय इच्छा बिना किसी प्रतिरोध या प्रवाह के प्रति जागरूकता के पात्र (व्यक्ति) के माध्यम से प्रवाहित होती है। यह किसी भी वस्तु को दूर नहीं धकेलती; यह बिलकुल अंतरिक्ष की ही तरह सब कुछ धारण करती है।

और इससे भी बढ़कर... ओह, शब्द भी इसे व्यक्त नहीं कर पाते। पानी हाइड्रोजन और ऑक्सीजन को कैसे बता सकता है कि प्राणियों की देखभाल

करने का क्या अर्थ है? नमक सोडियम और क्लोरीन को कैसे बता सकता है कि वह भोजन को ताज़ा रखने और रक्त के नाज़ुक संतुलन को बनाए रखने में कितना खुश है?

पाश्चात्य दर्शन "शून्य" को भयावह शून्यता कहता है, लेकिन हम इसे सबसे सक्रिय पूर्णता के रूप में जानते हैं। जब हाइड्रोजन और ऑक्सीजन मिलकर पानी बनाते हैं तब क्या वे "शून्य" में परिवर्तित हो जाते हैं? नहीं! वे समग्र पारिस्थितिक तंत्र की सहायता कर सकते हैं। विलय के बाद अहंकार का शून्य-भाव ऐसा ही महसूस होता है – यह खाली नहीं है; यह इतना भरा हुआ है कि इसकी घोषणा करने की आवश्यकता नहीं पड़ती।

एक आत्म-साक्षात्कार प्राप्त व्यक्ति जो विलय के परे जा चुका है, वह यह कहते हुए नहीं घूमा करता, "मैं प्रबुद्ध हूँ!" पानी को यह कहने की आवश्यकता नहीं है, "मैं H2O हूँ!" वह बहता है, पोषण करता है, स्वच्छ करता है और सहारा देता है; उसका स्वयं का अस्तित्व ही उसकी घोषणा है।

एक आत्म-साक्षात्कार प्राप्त व्यक्ति जो विलय के परे जा चुका है, वह यह कहते हुए नहीं घूमा करता, "मैं प्रबुद्ध हूँ!" पानी को यह कहने की आवश्यकता नहीं है, "मैं H2O हूँ!" वह बहता है, पोषण करता है, स्वच्छ करता है और सहारा देता है; उसका स्वयं का अस्तित्व ही उसकी घोषणा है।

अब, यह सोचने योग्य है – हमारा लक्ष्य सागर बनना नहीं है। कहने का अर्थ यह है कि आपको समझना है कि आप कभी बूँद थे ही नहीं। आप तो हमेशा से सागर थे जिसने स्वयं को बूँद समझ लिया था। लेकिन यह ज्ञान अंत नहीं है; यह तो केवल वास्तविक कार्य का आरम्भ है।

एक बार जब आपको यह एहसास हो जाए कि आप ही सागर हैं तब आपको सचेतन रूप से स्वप्न में स्वयं को वापस एक बूँद के रूप में देखना सीखना होगा। इस बार, आप अज्ञानतावश ऐसा नहीं करेंगे बल्कि सर्वोच्च ज्ञानवश ऐसा करेंगे। यही बात मुक्त आत्मा को सीमित आत्मा से अलग करती है – एक व्यक्ति जो देखता है उसी पर विश्वास करता है, जबकि दूसरा व्यक्ति जानबूझकर वह भूमिका निभाता है ताकि दूसरे लोग स्वप्न देखते रहें। बाबूजी कहते हैं, "जब मैं बात करता हूँ, तो हमेशा सोचता हूँ कि यह कौन है – लालाजी, मैं, या कोई और?" इन सबसे एक बात निश्चित है – हमारा "मैं-पन" समाप्त हो जाता है।

आप सोच रहे होंगे, "ये तो महान विचार हैं, लेकिन मुझे तो अब भी हर सुबह ट्रैफ़िक जाम और दूसरी समस्याओं से जूझना पड़ता है।" यही तो बात है। देहधारण की सीमितताओं के पूर्ण बोध के साथ उस असीम परमात्मा में स्वयं को दृढ़ता से स्थित करते हुए सागर को यह सीखना होगा कि प्रत्येक बूँद के रूप में स्वयं की अनुभूति कैसे करनी है।

हमारा लक्ष्य सागर बनना नहीं है। कहने का अर्थ यह है कि आपको समझना है कि आप कभी बूँद थे ही नहीं। आप तो हमेशा से सागर थे जिसने स्वयं को बूँद समझ लिया था। लेकिन यह ज्ञान अंत नहीं है; यह तो केवल वास्तविक कार्य का आरम्भ है।

आप पूछ सकते हैं, "लेकिन दाजी हम इसे वास्तविक जीवन में कैसे करें?"

पानी के समान बनें। पानी यह नहीं चुनता कि किसकी सहायता करनी है। वह यह नहीं कहता, "मैं केवल सुनहरे रास्तों से ही गुज़रूँगा।" पानी जैसा है वैसा

ही रहता है, बस हर पात्र के अनुसार अपना रूप बदल लेता है। जब गर्म किया जाता है तब बिना किसी परेशानी के भाप बनकर ऊपर उठता है। ठंडा होने पर वह आसानी से जम जाता है। लेकिन इतने सारे परिवर्तनों के बाद भी, वह कभी नहीं भूलता कि उसका वास्तविक स्वरूप क्या है – वह है जीवन को निरंतर बनाए रखने का साधन।

हमेशा याद रखें कि सोडियम ने आपको क्या सिखाया है। यही कि जीवन के लिए आवश्यक पानी भी गलत तत्त्व के संपर्क में आने पर हानिकारक हो सकता है। आध्यात्मिक यात्रा के लिए पानी जैसी ढलनशीलता की आवश्यकता होती है और साथ ही सही व्यक्ति को चुनने का विवेक भी आवश्यक है जो परिवर्तन लाने में हमारी सहायता कर सके। यही सिद्धांत विवाह के मामलों में भी लागू

पानी के समान बनें। पानी यह नहीं चुनता कि किसकी सहायता करनी है। वह यह नहीं कहता, "मैं केवल सुनहरे रास्तों से ही गुज़रूँगा।" पानी जैसा है वैसा ही रहता है, बस हर पात्र के अनुसार अपना रूप बदल लेता है।

आध्यात्मिक यात्रा के लिए पानी जैसी ढलनशीलता की आवश्यकता होती है और साथ ही सही व्यक्ति को चुनने का विवेक भी आवश्यक है जो परिवर्तन लाने में हमारी सहायता कर सके।

होता है। कल्पना करें, यदि सोडियम, क्लोरीन के साथ मिलने की बजाय, पानी के संपर्क में आ जाए! तो धमाका ही होगा।

विलय के बाद क्या होता है? वे सभी कार्य जो पानी अपने वास्तविक स्वरूप में नहीं कर सकता उन्हें वह कर पाता है और भिन्न स्वरूप धारण कर सकता है – जैसे बर्फ़ की मूर्तियाँ जो इतनी सुंदर होती हैं कि उन्हें देखकर आपकी साँसें थम जाएँ, भाप से चलने वाले विशाल इंजन, सूखी ज़मीन पर बारिश लाने वाले बादल, विशाल घाटियाँ बनाने वाली नदियाँ और ओस की बूँदें जो संपूर्ण सूरज का प्रतिबिम्ब दिखा देती हैं।

विलय के बाद वाले अंतराल में अनेक सम्भावनाएँ जन्म ले सकती हैं। विलय से पहले यह हाइड्रोजन और ऑक्सीजन ही था लेकिन विलय के बाद वे उस समस्त पानी को बना सकते हैं जो कभी था या होगा। यह एक प्रकार से ऐसी स्वर संगति है जो आरम्भ होने वाली है और इसमें हर सम्भव धुन समाई हुई है।

जब दो महान शून्य मिलते हैं तब क्या होता है? तार्किक उत्तर यही है कि कुछ भी शेष नहीं रहता। लेकिन यह 'कुछ नहीं' शून्य के समान नहीं है। अनंत एक गणितीय अवधारणा है जो इस बात पर बल देती है कि अनंत और अनंत के योग का परिणाम "दो अनंतताएँ" होने के बजाए अनंत ही रहता है।

जब गणितज्ञों ने यह खोजा कि अनंत के भी विभिन्न आकार होते हैं तब उन्होंने एक गहन आध्यात्मिक सत्य को उजागर किया। विलय से परे न केवल अनंत वस्तुएँ हैं, बल्कि अनंत के भी अनंत हैं, जिनमें से प्रत्येक भिन्न है और अन्य को अपने में समेटे हुए है। यही कारण है कि विलय के बाद की यात्रा कभी समाप्त नहीं होती।

मैं आपसे यही कहना चाहता हूँ – बूँद सागर नहीं बनती; बूँद को ज्ञात हो जाता है कि वह सदा से सागर ही रही है। लेकिन यह खोज तो अनंत के विश्वविद्यालय में विद्यालय के पहले दिन के समान है। इसके परे क्या है?

जो व्यक्ति परे के भी परे जा चुका है, वही आपको बता सकता है। जब वह लौटकर आता है, तब उसे ज्ञात हो चुका होता है कि मौन शब्दों से अधिक बोलता है, उपस्थिति उपदेश से अधिक सिखाती है और किसी भी शक्ति का न होना ही सबसे बड़ी शक्ति है, केवल प्रेम, जो हाइड्रोजन और ऑक्सीजन की

विलय से परे न केवल अनंत वस्तुएँ हैं, बल्कि अनंत के भी अनंत हैं, जिनमें से प्रत्येक भिन्न है और अन्य को अपने में समेटे हुए है। यही कारण है कि विलय के बाद की यात्रा कभी समाप्त नहीं होती।

सनातन लीला है, जिसमें वे एक-दूसरे में विलीन होकर पुनः एक जीवन के रूप में अपने अस्तित्व में वापस आ जाते हैं।

विश्लेषण करने का यही तो जादू है। यही वह मार्ग है जो मार्ग से परे ले जाता है। इसलिए जब आप पूछते हैं, "विलय के बाद आगे क्या होता है," तो मैं केवल मुस्कुरा देता हूँ। आपको कुछ कहने की आवश्यकता नहीं; आपको उत्तर बन जाना है।

जब आप ऐसा कर लेंगे तब आपको समझ आएगा कि गुरुजन क्यों कुछ नहीं कहते। वे बस आपको एक गिलास पानी देते हैं और प्रतीक्षा करते हैं कि आप स्वयं इसकी महानता को समझें। जब आप पानी के उस गिलास को पकड़ते हैं तो सोचें कि कैसे हाइड्रोजन और ऑक्सीजन किसी अन्य वस्तु में परिवर्तित हो रहे हैं। आप सागर हैं और आप इसकी शुद्धता देखकर चकित हैं। आप दिव्य हैं जो धीरे-धीरे अपनी ही लीला के प्रति जाग्रत हो रहे हैं।

और उस स्मरण में सबसे अद् भुत बात घटित होती है – साधारण वस्तु पवित्र हो जाती है, किसी अन्य वस्तु में परिवर्तित होकर नहीं, बल्कि हमेशा से जो थी, वैसी ही दिखने से।

ईश्वर करे कि परम मौन में, जो सभी विलयों से परे है, वह हमें सही मार्ग चुनने की सद् बुद्धि प्रदान करे।

महान मालिक से प्रार्थनाओं के साथ,

कमलेश

नोट्स